EVOLVING HORIZONS
An Interdisciplinary International Journal of Education,
Humanities, Social And Behavioral Sciences
(A Peer Reviewed Journal)
Volume 9 • November 2020 • ISSN : 2319 - 6521

कोविड-19 की चुनौतियों और संभावनाओं के बाद "शिक्षक- शिक्षा"

Dr. Manik Mohan Shukla[1]

सारांश

शिक्षण का कार्य, समस्त कार्यों में उत्तम और पवित्र माना जाता है। क्योंकि विद्यादान के समान अन्य कोई दूसरा कार्य नहीं है । शिक्षण प्रक्रिया के तीन अंगों (अध्यापक, छात्र, और पाठ्यक्रम) में अध्यापक सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है , शिक्षण की सफलता निश्चित रूप से अध्यापक पर निर्भर करती है। हम केवल यह मानकर चुप नही रह सकते कि अध्यापक जन्मजात होते है। आज दुनिया बदल रही है,इसलिए बदलते परिवेश में अध्यापकों के लिए भी निहित कौशल तथा तकनीकी से परिचित होना आवश्यक है जिससे समाज को कुशल अध्यापक मिल सकें ।और कुशल अध्यापक तैयार करना अध्यापक शिक्षा का काम है क्योंकि अध्यापक शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा भावी योग्य और कुशल अध्यापक तैयार हो सकते हैं ।

वर्तमान समय में अध्यापन को एक उद्द्म (Profession) के रूप में देखा जाता है। ऐसी स्थिति में उद्दम संबंधी दक्षता कुशलता एवं योग्यताओं को ग्रहण किए बिना कोई भी व्यक्ति एक सफल अध्यापक नहीं बन सकता । व्यक्ति में अध्यापन संबंधी कौशल, तकनीकी,प्रतिमान,विधि,संप्रेषण तकनीक ,अभिक्षमता,अभिवृद्धि,उत्तरदायित्व,आदि विकसित करने के लिए अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता होती है। प्रशिक्षण उसी प्रकार उपयोगी होता है, जैसे बिना तराशे हुए हीरे भी मूल्यवान तो होते ही हैं, लेकिन तराशने के बाद उनकी चमक, मूल्य, और सौंदर्य में कई गुना वृद्धि हो जाती है, ठीक वैसे ही यदि जन्मजात अध्यापक के पास उद्यमगत कौशल एवं व्यवहारगत अनुभव आ जाए, तो सोने में सुगंध आने की स्थिति को नकारा नहीं जा सकता है । पत्थर को

1. H.O.D, Department of Education, A. M. College, Gaya, Email_id: manikmohanshukla123@gmail.com, Mob: 9451605307

हीरा नहीं बनाया जा सकता तो कम से कम चमक-दमक और मूल्य में वृद्धि तो की ही जा सकती है ।शायद यही कारण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में अध्यापक शिक्षा पर अधिक बल देकर अध्यापको की योग्यता और क्षमता बढ़ाने पर बल दिया गया जिससे शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित न हो। आज सूचना प्रौद्योगिकी एवं संप्रेषण तकनीकी पर निर्भर समाज के लिए एक उत्तम अध्यापक को इन विधाओं से परिचित होना आवश्यक है। इसके लिए अध्यापक शिक्षा ही वह माध्यम है जो एक अध्यापक को, जिसे भावी पीढ़ी के शिक्षण का दायित्व भार को वहन करना है,इन आधुनिक तकनीकी कौशलों से परिचित एवं प्रशिक्षित कर सकती है। ज्ञान, अभिवृत्ति, कौशल और व्यवहार ,जो प्रशिक्षण के चार मूल आयाम है, तथा दर्शन ,मनोविज्ञान एवं शैक्षिक कलात्मकता, जो शिक्षा के आयाम हैं ,सभी अध्यापक शिक्षा में समाहित होने के कारण शिक्षण दक्षता की प्राप्ति हेतु यह अपरिहार्य बन चुके हैं । किन्तु वर्तमान समय में मानव जीवन में कोरोना वायरस के रहस्यमय घातक प्रवेश ने न केवल भारत वर्ष बल्कि संपूर्ण संसार के गति को रोककर स्थिर कर दिया है।यह एक असाधारण मानवीय संकट का समय है ,संकट की यह घड़ी पूरी दुनिया को बदलती जा रही है सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, जीवन सहित शैक्षिक क्षेत्रों को भी इसमें प्रभावित किया है । जीवन और समाज में एक बहुत बड़े रूपांतर का उदघोष हुआ है आज संपूर्ण मानव जाति को कोरोना के साथ खुद को समायोजित करना पड़ रहा है ।और इस भयंकर महामारी के समाप्ति के बाद भी भय ,व्याकुलता, घबराहट ,निराशा ,और शंका जैसे तत्व मानवीय जीवन में शामिल होकर उसे प्रभावित करते रहेंगे। ऐसी स्थिति में शिक्षा भी इससे प्रभावित हुए बिना कैसे रह सकती है, छात्रों की न आमने सामने की कक्षाएं चल पा रही हैं न परीक्षाएं हो रही है, और न आगामी कक्षा में प्रवेश ?

करोना वायरस से इस युद्ध में हमने अपने ज्ञान और नई शिक्षण तकनीकी को एक सक्षम हथियार के रूप में प्रयोग कर ,कक्षा शिक्षण के विकल्प के रूप में ऑनलाइन शिक्षा / डिजिटिल शिक्षा के नए विकल्पों का प्रयोग का शिक्षा में परिवर्तन लाने का प्रयास किया रहा है, जिसमें सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए छात्र-छात्राओं के पाठ्यक्रम को पूर्ण कराया जा रहा है। इसमें जूम एप मे ई-पाठशाला, स्मार्ट क्लासरूम गूगल क्लासरूम ऑडियो वीडियो आदि का प्रयोग विभिन्न संस्थाओ /शिक्षकों द्वारा किया जा रहा है जिससे उच्च शिक्षा का एक नया वर्चुअल रूपांतरण देखने को मिला ।

क्योंकि अध्यापक में शक्ति से अधिक सामर्थ्य ,और सामर्थ्य से अधिक शौर्य और शौर्य से अधिक ज्ञान, का महत्व होता है, समय एक ऐसा कोरा चेक है उस पर श्रम की कलम, और विचार की स्याही से मूल्य भरा जाता है ।श्रम और विचार मिलकर जो मूल्य भर देते हैं वही समाज को एक अच्छी सम्पति के रूप में प्राप्त होता है। क्योंकि समयानुसार विचार करना, व्यवहार करना ,और कार्य करना ,सफलता प्राप्ति का एक साधन है । समय हमारे जीवन का पर्याय

है, समय का सही सदुपयोग करने के लिए सही समय पर सही निर्णय लेना जरूरी है, हमारे जीवन की विचारधारा समय की उस धारा में बहती है जिस दिशा में हमारे निर्णय होते हैं । उचित समय पर सही निर्णय की कला उन अध्यापकों के पास होती है, जो दूरदर्शी विविकशील गुणवान और श्रम के पुजारी होते हैं जो रचनात्मक होने के साथ-साथ अनुभवी भी होते हैं। अतीत के आधार पर हमारा वर्तमान तैयार होता है और वर्तमान की नींव पर हमारे भविष्य का निर्माण का होता है। जीवन में यदि सफल होना है तो परिस्थितियां कितनी भी विपरीत क्यों न हो ,समय का सदुपयोग करने के साथ-साथ हम अध्यापकों को अपने भावी अध्यापकों के अंदर कुछ नया सीखने की ललक उत्पन्न करना चाहिए । कोरोना वायरस के प्रभाव से शिक्षा क्षेत्र में सबसे अधिक प्रभावित हुई है, तो वह है, अध्यापक शिक्षा !हमें अपने प्रशिक्षणार्थियो में वर्तमान समय में, समय के साथ समायोजन की क्षमता उत्पन्न करना चाहिए। क्योंकि मुख्य बात जो समझने योग्य है वह यह है कि समय को पकड़ने का प्रयास करके नहीं, समय का इंतजार करके नहीं, बल्कि समय से तेज भाग कर ही व्यक्ति अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है । क्योंकि समय के साथ चलने वाला व्यक्ति ही अपने कार्य क्षेत्र में सफल होता है। और यह तभी संभव है ,जब व्यक्ति समय के पीछे नहीं समय से आगे चले ।

चूंकि कोविड-19.जो वर्तमान समय मे पूरी दुनिया को अपने आगोश में लिए हुए है,किन्तु इसका भी अंत सुनिश्चित है।तो इसके समाप्ति के बाद,अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में क्या समस्याएं आएंगी,उनका समाधान कैसे होगा?कोरोना वायरस से अध्यापक शिक्षा पर क्या प्रभाव पड़ा है,इस शोध प्रपत्र में इन्ही विन्दुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

कोविड-19का प्रकोप समाप्त होने के बाद अध्यापक शिक्षा का भविष्य कैसा होगा ? क्या अध्यापको का प्रशिक्षण डिजिटिल/ऑनलाइन काम करने के कौशल पर आधारित होगा ?आदि बहुत से ऐसे विन्दु है जो अध्यापक शिक्षा की दिशा और दशा तय करेंगे।कोरोना वायरस से उत्तपन्न हुए संकट ने शिक्षा का परिदृश्य ही बदल दिया है।शिक्षिक- प्रशिक्षण का मूल उद्देश्य योग्य तथा कुशल अध्यापको का निर्माण करना है,जो राष्ट्र के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

प्रस्तावना

आज के इस विश्विव्यापी महामारी के समय में अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में नित्य प्रति सामाजिक आर्थिक शैक्षिक कारण सहित अनेक चुनौतियां उभर कर सामने आ रही हैं। अध्यापक शिक्षा का मूल उद्देश्य गुणात्मक स्तर से परिपूर्ण, तथा समाज के निर्देशक के रूप में कार्य करने में सक्षम अध्यापकों का निर्माण करना है । इस तरह के कुशल अध्यापको के निर्माण के तीन स्तर माने जाते हैं---

प्रथम स्तर

एक कुशल एवं योग्य अध्यापक में विषय विशेषज्ञता तथा बाल मनोविज्ञान का ज्ञान और व्यावहारिक अनुभव होना

अपेक्षति है । क्योंकि अध्यापक समाज निर्माता होता है इसलिए विषय विशेषज्ञता होने के साथ-साथ उसे राष्ट्रीय लक्ष्य तथा भारतीय मूल्य के बारे में जानकारी रखना आवश्यक है। उसका व्यक्तित्व ऐसा हो, कि वह समाज का नेतृत्व कर विद्यालय और समुदाय /समाज में संबंध स्थापित कर सके । उसके लिए अधिगम निर्देशन से लेकर अधिगम अनुभव, संरचना एवं प्रस्तुतीकरण तथा अधिगम प्रोत्साहन एवं अधिगम प्रतिफल की प्राप्ति को सुनिश्चित करना आवश्यक होता है । इस तरह आज के परिवेश में उत्तम एवं योग्य अध्यापक के रूप में अपने आप को प्रतिस्थापित करना बहुत कठिन कार्य है।

द्वितीय स्तर

एक उत्तम कुशल एवं दक्ष अध्यापक में कुशल संप्रेषण क्षमता ,व्यावसायिक दक्षता तथा शिक्षण प्रबंधन संबंधी योग्यता एक आवश्यक गुण माना जाता है। संप्रेषण कौशल में दक्ष एवं अध्यापन काल में संप्रेषण अंतराल न्यूनतम रखने वाला अध्यापक ही कुशल संप्रेषक हो सकता है । इसके लिए अस्पष्टता संक्षिप्तता, तार्किक अनुक्रम में तथ्यों का प्रस्तुतीकरण, तथा उदाहरण सहित स्पष्टीकरण जैसे तत्व सहायक के रूप में कार्य करते हैं ।वर्तमान समय मे अध्यापक में शिक्षण दक्षता के साथ साथ आने वाली चुनौतियों का सामना करने की शक्ति हो, उसमें दायित्वबोध ,कर्तव्यनिष्ठा अपने व्यवसाय के प्रति सम्मान एवं प्रतिष्ठा की भावना, प्रजातांत्रिक मूल्यों के प्रति श्रद्धा तथा स्वस्थ संवेगात्मक विकास जैसे विशिष्ट गुणों का समन्वय आवश्यक है। संवेगात्मक तथा भावात्मक अभिव्यक्ति के अनुकूल ढंग से नियंत्रण के द्वारा ही प्रभावकारी एवम आकर्षक व्यतित्व संभव हो पाता है जो एक अध्यापक की मूल्यवान संपदा है।

आज के परिवेश में अधिगमकर्ता के प्रति सहानुभूति पूर्ण मनोभाव मनोवैज्ञानिक दृष्टि से आवश्यक है। उनके प्रति प्रेम एवं स्नेह भाव तथा सहयोगात्मक एवं प्रेरणा पद प्रवृतियां भी आवश्यक है।

तृतीय स्तर

एक कुशल अध्यापक में ग्रुप 2 अस्त्रों के साथ-साथ उस में उचित मार्गदर्शन एवं परामर्श प्रदान करने की क्षमता, प्रभावी कार्य कुशलता ,सांस्कृतिक, सामाजिक, तथा मानवीय मूल्यों के प्रति रुचि, निष्पक्षता ,दृणता एवं मान्यताओं का अनुपालन जैसे गुण होने चाहिए । क्योंकि सांस्कृतिक विचारधारा, विश्वास ,उत्तम संस्कार, व्यावहारिक आदर्श, आदि गुणों से संपन्न अध्यापक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अधिगमकर्ता के व्यवहारों को प्रभावित करते हैं। क्योंकि शिक्षा के उद्देश्य कितने भी श्रेष्ठ और महान क्यों न हो ,पाठ्यक्रम कितना भी उपयोगी, अग्रदर्शी जनतंत्रीय लचीला और व्यापक क्यों न हो, शिक्षण विधियां कितनी ही प्रभावशाली और रूचि पूर्ण क्यों न हो, भौतिक सुविधाएं कितनी भी क्यों न उपलब्ध हों, यदि शिक्षक प्रभावशाली नहीं है, वह अपने विषय का विशेषज्ञ नहीं है उसे अपने कार्य में रुचि नहीं है , और उसका दृष्टिकोण व्यापक नहीं है, तो वह छात्रों में उस भावना का विकास नहीं कर सकता, जिसकी समाज को आवश्यकता

तथा अध्यापक से अपेक्षा है। शिक्षक अपने कार्य व्यवहार और व्यक्तित्व के द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास कर सकता है।

विषय वस्तु

विश्वव्यापी महामारी कोरोना वायरस की इस संकटकालीन स्थिति में अध्यापक शिक्षा के सामने बहुत ही चुनौतियां उभर कर आ रही हैं। मेरा अपना विचार है कि कोरोना वायरस के संकटकालीन स्थिति के पहले भी अगर शिक्षा के क्षेत्र में सबसे अधिक गिरावट आई है तो वह है अध्यापक शिक्षा ! आज जिस तेजी के साथ पारंपारिक एवं मानवीय मूल्यों में गिरावट आ रही है नागरिकों में अपने कर्तव्यों के निर्वहन से विमुख होने की प्रवृत्ति का बढ़ना, इसके लिए यदि कोई सबसे अधिक जिम्मेदार है तो वह है अध्यापक शिक्षा ? इससे यह प्रतीत होता है कि शिक्षा अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में पूर्णता सफल नहीं हो रही है।आज शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में अपनी दिशा भटक गई है इसीलिए अध्यापक शिक्षा की यह दुर्दशा हुई है आज हम योग्य शिक्षक तो दूर एक साधारण शिक्षक भी नहीं तैयार कर पा रहे हैं इसके लिए हमारी सरकार और उसकी नीतियां भी कम दोषी नहीं है।

शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर योग्य और कुशल तथा कर्मठ अध्यापकों को तैयार करने की जिम्मेदारी सदा से ही अध्यापक शिक्षा पर रही है ।किंतु वर्तमान समय में कोरोना वायरस के प्रकोप के बाद भी अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रम में जो बाधाएं या समस्याएं आएंगी उनमें से कुछ प्रमुख बाधाएं निम्नलिखित है------

प्रवेश संबंधी समस्याएं

अध्यापक शिक्षा में शिक्षण अभिक्षमता एवं शिक्षकीय अभिवृत्ति से युक्त,अपने विषय का विशेषज्ञ और शिक्षण को एक आदर्श के रूप में स्वीकार करने वाले व्यक्तियों का प्रवेश होना चाहिए। जो विभिन्न कारणों से व्यावहारिक परिस्थितियों में संभव नहीं हो पाता है। यद्यपि अध्यापक शिक्षा में प्रवेश संबंधी मनमानी दूर करने के लिए, एवं योग्य लोगों को इस क्षेत्र में लाने के लिए लगभग संपूर्ण देश में राज्य स्तरीय प्रवेश परीक्षा के आधार पर प्रवेशार्थियों का चयन किया जाता है किंतु पारदर्शिता एवं राज्य सरकार के दृढ़ इच्छाशक्ति के अभाव के कारण राज्य स्तरीय परीक्षा से महाविद्यालय की सीटें रिक्त रह जाती रह जा रही हैं ।और विद्यार्थी चाह कर भी प्रवेश नहीं पा रहे हैं । वर्तमान समय में कोरोना वायरस की महामारी ने इस संकट को और गहरा कर दिया है जुलाई माहवतक प्रवेश परीक्षा नहीं हो पाई है ऐसी स्थिति में अध्यापक शिक्षा के संस्थानों के सामने प्रवेश की बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न हो गई है । इसप्रकार कोरोना वायरस ने अध्यापक शिक्षा में प्रवेश की समस्या उत्पन्न करके बहुत अधिक प्रभावित किया है।

1. संस्थागत प्रशासनिक समस्याएं

राज्य शिक्षा विभाग एवं विश्वविद्यालयों द्वारा अध्यापक शिक्षा के संस्थानों के प्रति उदासीनता के कारण वित्तविहीन अध्यापक शिक्षा संस्थान के मालिक योग एवं कर्मठ अध्यापकों की नियुक्ति न कर N.C.T.E के.

मानकों की अनदेखी कर काम चलाऊ और कम से कम अध्यापक रखकर पाठ्यक्रम चला रहे हैं, जसिमें योग्य शक्षिकों का नरि्माण हो रहा है मुझे तो कदाचति इसमें संदेह है।अध्यापक शक्षिा संस्थान वर्तमान समय में पूंजी पतयिों के उद्योग मात्र बनकर रह गए हैं जो बहुत बड़ी समस्या है।

2. पाठ्यक्रम संबंधी समस्याएं

अध्यापक शक्षिा संस्थान राष्ट्रीय अध्यापक शक्षिा परषिद के दशिा नरि्देशन में खुलते तो हैं कतिु चलते नहीं है। साथ ही साथ देश के वभिनि्न वशि्ववद्यिालयों में पाठ्यक्रम अलग-अलग है जबकि राष्ट्रीय अध्यापक शक्षिा परषिद द्वारा इसके पाठ्यक्रम का नरि्धारण कर संपूर्ण देश के अध्यापक शक्षिा संस्थान में लागू कराना चाहए। पाठ्यक्रम में सैद्धांतकि प्रश्न-पत्रों पर अधकि ध्यान दयिा जाता है व्यावहारकि पर कम ! यह अध्यापक शक्षिा की गुणवत्ता को प्रभावति करता है। जो व्यावहारकि पक्ष है भी उसका पालन ठीक से राज्य सरकार/ वशि्ववद्यिालय के दशिा नरि्देशन के अभाव में पालन नहीं हो रहा है। पाठ्यक्रम नरि्माण में अध्यापक शक्षिा से अनभज्ञि लोगों को रख दयिा जाता है जसिसे इसकी गुणवत्ता नहीं के बराबर रह पाती है।

3. शक्षिण अभ्यास संबंधी समस्याएं

सभी स्तरों पर अध्यापक शक्षिा का अगर कोई सबसे अधकि उपेक्षति पक्ष है,तो वह है शक्षिण अभ्यास ! जबकि मेरे वचिार से अध्यापक शक्षिा का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है अभ्यास शक्षिण का प्रशक्षिण । कनि्तु राज्य सरकार/ वशि्ववद्यिालय की उदासीनता के कारण यह पक्ष सबसे उपेक्षति है इसलए देश को योग्य शक्षिक नहीं मलि पा रहे हैं। इसकी उपेक्षा के भी कई कारण हैं जैसे पर्याप्त संख्या में प्रशक्षिण प्राप्त करने वाले वद्यिालयों की कमी, अध्यापक शक्षिा संस्थानों में अध्यापकों को केवल कागज पर सेवारत दखिाना, अध्यापक शक्षिा संस्थानों का स्थलीय परीक्षण प्रतवरि्ष न होना ,आदि बहुत से कारण हैं जसिसे शक्षिण अभ्यास ठीक से नहीं हो पाता साथ ही साथ जो संस्थान नयिमानुसार अच्छे ढंग से प्रशक्षिण कराते भी है,उनको सरकार सरकार/ वशि्ववद्यिालय द्वारा कोई पुनर्बलन भी नहीं मलिता है यह सभी कारण अध्यापक शक्षिा को प्रभावति कर रहे हैं । वर्तमान समय में तो कोरोना वायरस महामारी के कारण स्कूल बंद होने से प्रशक्षिण पर सीधा असर पड़ रहा है ।

4. परीक्षा संबंधी समस्याएं

समय में प्रचलति अध्यापक शक्षिा की परीक्षा प्रणाली न केवल एकपक्षीय बल्कि सर्वथा अनुपयोगी भी है। यह स्मृति और पुनः प्रस्तुतीकरण की क्षमता का आकलन मात्र करती है । वर्तमान परीक्षा प्रणाली से न तो ज्ञान, बोध अनुप्रयोग, क्षमता, संश्लेषण ,वश्लिेषण संबंधी कुशलताओं का मापन हो पाता है ,और न ही अध्यापक शक्षिा में नरितर मूल्यांकन की यथार्थता, कभी वास्तवकिता के धरातल पर पाती है ।अध्यापक शक्षिा में सैद्धांतकि, एवं व्यावहारकि, दोनों परीक्षाएं केवल नाम मात्र की हो रही है । जसिसे न तो अध्यापक

शिक्षा संस्थान ,और न ही छात्रों को असफल होने का भय रहता है। अर्थात यह मान लिया जाता है कि अध्यापक शिक्षा में प्रवेश पाने का आशय अध्यापक का डिग्री मिल जाना है । ऐसी स्थिति में अध्यापक शिक्षा संस्थान उदासीन होकर, एक तरफ जहाँ योग्य अध्यापक नही रखते वहीँ दूसरी तरफ,छात्र प्रशिक्षण में मन नही लगाते, जिसका दुष्परिणाम सम्पूर्ण देश को उठाना पड़ रहा है । इससे निरंतर स्वाध्याय और अभ्यास का महत्व समाप्त हो गया है सत्रीय एवं प्रायोगिक कार्यों का आंतरिक मूल्यांकन होने के कारण यह मूल्यांकन मात्र खानापूर्ति/ औपचारिकता बनकर रह जाते हैं । अंक की प्राप्ति संबंधित संस्थान/ अध्यापक की कृपा पर ही निर्भर हो जाती है । आंतरिक एवं बाहय मूल्यांकन में न कोई पारदर्शिता, न गुणवत्ता ,और न ही वस्तुनिष्ठता रह जाती है । उच्चतम तथा न्यूनतम अंक सीमा तय करके उसी के बीच अंक चढ़ा दिया जाता है जिसका कारण योग्य अध्यापकों का अभाव ही है ।बहुत से विश्वविद्यालयों में अध्यापक शिक्षा की प्रायोगिक परीक्षाओं का कोई मापदंड न होने के कारण एक-एक अध्यापक एक ही दिन में कई कई संस्थानों में परीक्षक के रूप में केवल अंकतालिका पर हस्ताक्षर करते हैं, कोई देखने वाला नहीं है। इस प्रकार अध्यापक शिक्षा में परीक्षा मात्र औपचारिकता बनकर रह गई है जिससे अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रश्नचिन्ह खड़ा हो गया है।

अध्यापक शिक्षा की इन सभी समस्याओं के अतिरिक्त और भी कई समस्याएं हैं ,जैसे सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा संबंधी व्यवस्था न होना, अध्यापक शिक्षा के प्रति सरकार की उदासीनता, एवं सरकारी संस्थानों में अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम का पर्याप्त मात्रा में न होना, इनसभी कारणों से अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता पर काफी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

उपसंहार

समस्याएं ही चुनौतियों के उत्पन्न होने की आधारशिला का कार्य करती हैं। अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में आज बहुत ही विचारणीय चुनौतियां हैं जिनका समाधान करके ही अध्यापक शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाया जा सकता है। अध्यापक शिक्षा में समय रहते समस्याओ का समाधान न किया गया तो वह दिन दूर नहीं जब योग्य अध्यापकों का देश में अकाल सा पड़जाएगा ----

- अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में भारतीय आदर्श, मूल्य, परंपरा, संस्कृति एवं संस्कार आदि को स्थान देते हुए आधुनिक विकेंद्रीकरण,एवं भूमंडलीकरण पर को शामिल किया जाए।
- अध्यापक शिक्षा में पर्यावरण प्रदूषण ,जनसंख्या विस्फोट ,राष्ट्रीय अस्मिता, संवैधानिक दायित्व, अधिकार एवं कर्तव्य तथा नेतृत्व संबंधी कुशलता आदि के संदर्भ में अध्यापक शिक्षा अग्रणी भूमिका निभा सकता है । साथ ही साथ संस्कार आधारित, मूल्य केंद्रित तथा प्रतिबद्धता उन्मुख अध्यापक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाय।

- आधुनिक व्यवहार एवं उपभोक्तावादी संस्कृति के संदर्भ में मनो सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारको के प्रभाव का आकलन संबंधी समस्या परअध्यापक शिक्षा कैसे नियंत्रण करें ।
- शिक्षामें बढ़ते नवाचार एवं क्रियात्मक अनुसंधान आदि से संबंधित समस्याएं भी अध्यापक शिक्षा में आज सामने आ रही है इनका भी समाधान करना आवश्यक है ।
- अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में आज प्रजातांत्रिक प्रशासन तथा समन्वयात्मक प्रबंधन से संबंधित चुनौतियां भी सामने आ रही हैं।संवैधानिक मर्यादाओं एवं नेतृत्व संबंधित दक्षताओं के विकास हेतु प्रयत्न को सफल बनाने के लिए विचार करना आवश्यक है।
- अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में मात्रात्मक एवं गुणात्मक वृद्धि की चुनौती--- --! गुणवत्ता के स्तर को बनाए रखना तथा वास्तविक एवं दृढ़ इच्छाशक्ति को प्रोत्साहित कर योग्य अध्यापकों के निर्माण की चुनौती एक बहुत बड़ी समस्या है -।

अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में दिन-प्रतिदिन अनेक चुनौतियां सामने आ रही हैं जिनका समाधान करना प्रत्येक आदर्श अध्यापक का उत्तरदायित्व है जिससे अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता बनी रह सके।कहा गया है कि" योग्य अध्यापकों का देश उज्जवल भविष्य का देश होता है", और कोई भी देश अपने अध्यापकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता है, ऐसी स्थिति में अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता को बनाए रखना आवश्यक है ।जिससे भारत पूर्व में प्राप्त विश्व गुरु की उपाधि को पुनः प्राप्त कर सके ।

निष्कर्ष एवं सुझाव

शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंगों में सबसे महत्वपूर्ण स्थान अध्यापक का है क्योंकि बालक के मानसिक व सामाजिक समस्याओं से अध्यापक का ही प्रत्यक्ष संबंध होता है। श्री बालकृष्ण जोशी ने लिखा है कि " सच्चा अध्यापक धन के अभाव में धनी होता है, उसके संपत्ति का विचार बैंक में जमा धन से नहीं किया जाना चाहिए, अपितु उस प्रेम और भक्ति से जो उसने अपने छात्रों में उत्पन्न किया है ।वह सम्राट है, जिसका साम्राज्य उसके शिष्यों के कृतज्ञ मष्तिष्को में ,सीमा चिन्हों से अंकित है, जिसको संसार की कोई भी शक्ति हिला नहीं सकती, और न जिसको अणु बम्ब नष्ट कर सकता है। अध्यापन देव नियोजित कार्य है। वह मनुष्य सौभाग्यशाली है जो शिक्षक है। उससे दुगना सौभाग्यशाली वह है जिसने हमारे इस महान देश में शिक्षक का जन्म लिया है, जहां गुरु के प्रति प्रेम और सम्मान व्यक्त कर उसे देवताओं की श्रेणी में रखा गया है,जहाँ राजा और रंक ने उसके प्रति श्रद्धा व्यक्त करने में प्रतिस्पर्धा की है। उससे तिगुना सौभाग्यशाली वह है जो इस देश में इस भव्य उषाकाल में शिक्षक है, जो अद्वितीय प्रगति और वैभव की संभावनाओं से अलोकित है,जबकि मातृभूमि स्वर्ग युग में पदार्पण कर रही है ।

किन्तु क्या हम आज ऐसे अध्यापकों का

नरि्माण करने में सक्षम हैं, जो अपने ज्ञान की ज्योति से समाज को प्रकाशित कर सकें, जो अपने चुंबकीय व्यक्तित्व से छात्रों को अपनी ओर आकर्षित कर सकें और जो अपने विचारों से समाज का मार्गदर्शन कर सकें। मुझे तो कदाचित इसमें संदेह है ?

योग्य अध्यापकों के नरि्माण के लिए ,प्रशक्षिण व्यवस्था में वांछनीय सुधार करने के लिए, सर्वप्रथम हमें प्रशक्षिण कार्यक्रम के रुढगित परधिान को हटाना होगा, तथा इसे अधकि व्यावहारकि एवं प्रगतशिील रूप देना होगा। ऐसी प्रशक्षिण व्यवस्था का नरि्माण करना होगा, जो भारतीय प्रजातांत्रकि शक्षिा व्यवस्था की मांग को पूर्ण कर सके। साथ ही इस व्यवस्था में नरि्धन एवं वशिाल भारतीय समुदाय की प्रमुख सीमाओं का ध्यान रखा जाए। अध्यापक शक्षिा का मुख्य उद्देश्य ऐसे अध्यापकों का नरि्माण करना होना चाहिए, जो देश की वपिरीत परस्थितियिों में भी बालक के लिए शक्षिा को एक मनोरंजन एवं अर्थपूर्ण प्रक्रयिा बना सकें। यह तभी संभव है जब अध्यापक शक्षिा प्रशक्षिण संस्थान पूर्ण वफादारी परश्रिम एवं लगन की भावना से अपना कार्य करें। क्योंकि अध्यापक शक्षिा का मुख्य उद्देश्य समाज के लिए योग्य एवं दक्ष शक्षिक तैयार करना है जसिसे वे बालकों को अच्छी शक्षिा दे सकें। दक्ष शक्षिक से तात्पर्य शक्षिण की बारीकयिों से परचिति होना है।अकुशल शक्षिक उस बेलदार (अप्रशक्षिति शलि्पी) के समान है जो भवन नरि्माण की सामग्री से तो परचिति है, कति भवन नरि्माण की कला को नहीं जानता। जैसे कसिान कृषि कार्य में ,कुम्हार बर्तन के कार्य में दक्ष होते हैं वैसे ही अध्यापक शक्षिण कार्य में दक्ष हो। अबयह अवधारणा अपवाद हो गई है कि शक्षिक जन्मजात होते हैं, अब शक्षिक, प्रशक्षिण एवं अभ्यास के द्वारा शक्षिक नरि्मति कए जाते हैं ।

भवषि्य में वही व्यक्ति सफल अध्यापक हो सकता है जसिमें कोमल मस्तषि्क का वकिास करने के परणिाम स्वरूप आनंद का अनुभव प्राप्त करने की लालसा हो, जो नैतकि एवं सामाजकि मूल्यों में आस्था रखता हो, वचिारों के संसार में वचिरण करने की जसिमें तीव्र उत्कंठा हो, तथा अप्रयि परस्थितियिों में भी अपने व्यवसाय के प्रति पूर्ण ईमानदारी हो। आज हम गुरुकुल से E कुल अर्थात (आश्रम पद्धति से ई- पाठशाला) तक पहुंच गए हैं। आज विद्यिालय बदल रहे हैं ,विद्यिालय के स्वरूप बदल रहे हैं,विद्यिालय बदलेंगे तो पाठ्यक्रम बदलेगा ,और शक्षिक भी बदलेगा तो क्या शक्षिक शक्षिक बदल रहे हैं, यह पूरी शैक्षकि यात्रा कसि दशिा में आगे बढ़ रही है, और अध्यापक शक्षिा इसके लिए अध्यापको के नरि्माण करने के लिए कहां तक तैयार है यह एक वचिारणीय वदि है।

सुझाव

हमारे देश में सफल अध्यापक तैयार करने के लिए अध्यापक शक्षिा कार्यक्रम को एक नया मोड़ देना होगा, जसिमें नम्नि बदिुओं को शामलि करना आवश्यक प्रतीत होता है--

- अध्यापक शक्षिा में सैद्धांतकि वषियों की अपेक्षा व्यावहारकिता पर अधकि बल दयिा जाए,और साथ ही साथ

व्यवहारकि प्रशक्षिण पर सरकार द्वारा कुछ मान देय(पुनर्बलन)के रूप में देने की व्यवस्था की जाए जसिसे इसके प्रतलिोगों का रुझान बढेगा।

- राज्य शक्षिा वभिाग / वश्विवद्यिालय अध्यापक शक्षिा पाठ्यक्रम को जनरल पाठ्यक्रम की तरह न माने इसके प्रति उदासीनता समाप्त होनी चाहएि।
- अध्यापक- शक्षिा के पाठ्यक्रम के नरि्माण में अध्यापक शक्षिा से जुड़े हुए शक्षिावदिों को स्थान दयिा जाए जो वास्तव में अध्यापक शक्षिा के क्षेत्र में कार्य कर चुके हैं या कार्य कर रहे हैं ।
- अध्यापक शक्षिा की सैद्धांतकि एवं और व्यावहारकि परीक्षाएं शक्ति के साथ कराई जाएं। व्यावहारकि परीक्षाओं में कम से 3 परीक्षक हो,जसिमें(एक परीक्षक दूसरे प्रदेश का, और एक परीक्षक, दूसरे वश्विवद्यिालय का, और एक परीक्षक संबंधति प्रशक्षिण संस्थान का होना चाहएि) तभी परीक्षा की गुणवत्ता बनी रह पाएगी।
- अध्यापक शक्षिा में शैक्षकि प्रौद्योगकिी प्रचलन एवं मुक्त अधगिम, स्व अधगिम आत्मप्रेरति अधगिम तथा आत्म नरि्देशति अधगिम ,व्यवहार में त्वरति परविर्तन मूलक शक्षिण अधगिम तकनीकी का प्रयोग सुनश्चिति कयिा जाए ।
- अध्यापक का कार्य बाल मस्तष्कि का ही नहीं, बल्कि बाल व्यक्तत्वि का वकिास करना है, इसलएि अध्यापक शक्षिा के स्तर को ऊंचा उठाना आवश्यक है।
- अध्यापक शक्षिा में पर्यावरण प्रदूषण ,जनसंख्या वस्फिोट ,राष्ट्रीय अस्मति ,संवैधानकि दायत्वि, अधकिार एवं कर्तव्य, नेतृत्व संबंधति कुशलता आज के संदर्भ में में शामलि करना आवश्यक है।

अध्यापक अपने वद्यिार्थयिों को भयमुक्त बनाकर मानवता का पाठ पढ़ाता है। पौराणकि ग्रंथों में मानवता को धर्म बताया गया है। अथर्ववेद में कहा गया है कि“ यथा धौश्र पृथवि च न वभिीतो न नरिष्यत : एवा मे प्राण मा वभि:----अर्थात व्यक्ति को कसिी प्रकार का भय नहीं पालना चाहएि ।भय शारीरकि और मानसकि रोग उत्पन्न करते हैं। डरे हुए व्यक्ति का कभी भी कसिी भी प्रकार का वकिास नहीं हो सकता। संयम के साथ नरि्भीक होना जरूरी है ।

वर्तमान समय की यह महामारी मानवता पर भारी पड़ रही है आज हर व्यक्ति एक दूसरे को शंका की दृष्टि से देखता है ,कि हमारे सामने वाला व्यक्ति कहीं संक्रमति तो नहीं है। कोरोना वायरस की इस महामारी के कारण समाज में वश्विास के स्थान पर अवश्विास, और नज़दीकयिों के स्थान पर दूरयिां बढ़ी हैं, पहले जैसा वश्विास और नज़दीकयिों में कमी आई है , ऐसी स्थति समाज के लएि घातक सद्धि हो सकती है, और भवष्यि में इसके गंभीर परणिाम भी हो सकते हैं क्योंकि समाज या राष्ट्र की उन्नति के लएि समाज में आपसी प्रेम सहयोग वश्विास और भाईचारा

आवश्यक है,और यह कार्य कोरोना वायरस की समाप्ति के बाद समाज में अच्छे ढंग से एक कुशल एवं योग्य अध्यापक ही कर सकता है क्योंकि अध्यापक आज के परिवेश में भी समाज का सबसे प्रतिष्ठित और सबसे विश्वसनीय व्यक्ति माना जाता है । इसलिए हमें अध्यापक शिक्षा पर कोरोना वायरस महामारी के बाद और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, उनको इस तरह से प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है कि वह संक्रमण काल के बाद समाज में एक दूसरे के बीच प्रेम विश्वास सौहार्द उत्पन्न करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

*डॉ० गुप्ता, एस०पी० - भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएँ

*डॉ० सिंह, करण -- भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याये,

*डॉ० भट्टाचार्य, सी० जी०--अध्यापक शिक्षा

*डॉ०रस्तोगी, के० जी०---भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएं

*डॉ० पचौरी, गिरीश,---उद्दीयमान भारतीय समाज मे शिक्षक